

# जिसके मरज बैठ जया दिल में हरियाणवी भजन लिरिक्स



जिसके मरज बैठ जया दिल में,  
ना उसके कोई दवाई लागे,  
ना अपण्या की मान्या करता,  
जिस्कै सिख पराई लागे।bd।

---

कौन जो मन की मेट भुख दे,  
पल में गिला दूर थुकदे,  
बुरे काम मैं लाख फुक दें,  
पुन मैं ना एक पाई लागे,  
घणे भाग हों उस मानस के,  
जब आच्छी जगह कमाई लागे,  
जिस्कै मरज बैठ जया दिल पै,  
ना उसके कोए दवाई लागे,  
ना अपण्या की मान्या करता,  
जिस्कै सिख पराई लागे।bd।

---

चकर न्यारा न्यारा चलता,  
ना मानश का चारा चलता,  
किसेका तो ही गुजारा चलता,  
किसे के धन कै काई लागे,  
को को करै मोज किसे नै,  
जीवन यो दुखदाई लागे,  
जिस्कै मरज बैठ जया दिल पै,  
ना उसके कोए दवाई लागे,  
ना अपण्या की मान्या करता,  
जिस्कै सिख पराई लागे।bd।

---

बन जा लायक देखन लायक नज़ारे,  
बहोत इसी चकर में आ रे,  
ये गैर बणसे प्यारे दुश्मन,  
माँ का जाया भाई लागे,  
माँ बापा ने दूर बैठा देया,  
घर में सेशन लुगाई लागे,  
जिस्कै मरज बैठ जया दिल पै,  
ना उसके कोए दवाई लागे,  
ना अपण्या की मान्या करता,

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल  
एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरूर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - <https://www.bhajandiary.com>



बहोत से गए देख अगत ने,  
बहोत से रोवे से किस्मत ने,  
गुरु राम भगत या बात तेरे ते,  
श्री जगन्नाथ समझाई लागे,  
कितना भला करेजा जगत में,  
आकर हाथ बुराई लागे,  
जिस्कै मरज बैठ जया दिल पै,  
ना उसके कोए दवाई लागे,  
ना अपण्या की मान्या करता,  
जिस्कै सिख पराई लागे।bd।

जिस्के मरज बैठ जया दिल में,  
ना उसके कोई दवाई लागे,  
ना अपण्या की मान्या करता,  
जिस्कै सिख पराई लागे।bd।

गायक – नवीन पुनिया ।

प्रेषक – अंकित धाकड़ ।

**7678408695**